पूर्वी-यूरोप और साम्राज्यवाद

"पहले व्लादिमिर पुतिन ने जॉर्जिया को घायल (Mauled) किया लेकिन विश्व ने उसे माफ कर दिया-क्योंकि अलग-थलग (cut a drift) करने के लिए रूस बहुत बड़ा था। फिर उसने क्रीमिया को भकोस (gobbled) लिया लेकिन विश्व ने इसे स्वीकार लिया- क्योंकि क्रीमिया शुरू से ही रूसी रहा था। अब उसने पूर्वी यूक्रेन में घुसपैठ की है परन्तु विश्व हिचकिचा रहा है क्योंकि घुसपैठ (infiltration) हमला (invasion) तो नहीं है। लेकिन अब पश्चिम श्रीमान पुतिन का सामना नहीं करेगा तो वह उसे अपने दरवाजे पर पायेगा।" ('Russia and Ukraine Insatible The cost of Stopping the Russian bear now is high-but it Will only get Higher if the West does nothing', Apr 19th 2014, the Economist अनुवाद हमारा)

'दि इकोनोमिस्ट' का यह लेख यूक्रेन संकट के समय रूस पर कार्यवाही करने के लिए पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों को हर तरह से उकसाता है। वह पुतिन को शैतान की तरह पेश करता है। हकीकत यह है कि यूक्रेन का वर्तमान संकट पिछले दो दशकों से रूस की घेराबंदी का एक परिणाम है।

1989-91 में सोवियत संघ के विघटन के बाद से ही पूर्वी यूरोप के देशों (जिसमें पूर्व सोवियत संघ में शामिल और पूर्व समाजवादी देश भी थे) में पश्चिम साम्राज्यवादी देशों की आक्रामक और अपने दायरे में समेटने की नीति रही है। आज पूर्वी यूरोप के अधिकांश देश नाटो (नॉर्थ अंटलांटिक ट्रीटी आर्गनाइजेशन) के हिस्से बनाये जा चुके हैं। कुछ देशों को छोड़ दिया जाय तो अन्य सभी यूरोपीयन यूनियन के हिस्से बनाये जा चुके हैं। अमेरिका ने पूर्वी यूरोप के देशों में कई स्थानों पर नये सैन्य अड्डे तो कई स्थानों पर पूर्व सोवियत संघ के सैन्य अड्डों पर कब्जा कर लिया है। रूस की पश्चिमी सीमा पर स्थित देशों को एक के बाद एक नाटो का सदस्य बनाते हुए एक तरह उसे ठीक ढंग से घेर लिया गया है। कभी सोवियत संघ के विघटन के समय रूस के शासकों को अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने यह वचन दिया था कि वे नाटो का विस्तार नहीं करेंगे और पूर्व सोवियत संघ के देशों को उसमें शामिल नहीं करेंगे। यह वचन देने वाले मुकर गये और नब्बे के दशक में रूसी साम्राज्यवादी इस हालत में नहीं थे कि वे इस वचन का पालन करवा सकें। रूस की आक्रामक ढंग से घेराबंदी जो नब्बे के दशक में नये ढंग से शुरू हुई थी आज तक जारी है।

यूगोस्लाविया, जॉर्जिया और यूक्रेन साम्राज्यवादी देशों के हस्तक्षेप और आपसी होड़ के कारण आज क्षत-विक्षत हो चुके हैं। यूगोस्लाविया वस्तुतः कई नये राष्ट्रों में बंट गया। जॉर्जिया के दो हिस्से दक्षिण ओस्सेशिया (South Ossetia) और अबखाजिया (Abkhazia) लगभग दो स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में अस्तित्व में आ चुके हैं। यूक्रेन के क्रीमिया प्रायद्वीप का रूस में विलय हो चुका है तथा उसके पूर्वी हिस्से में रूसी साम्राज्यवादियों के समर्थन से अलगाववादी आंदोलन चरम पर है।

पूर्वी यूरोप के देश जहां साम्राज्यवादी हस्तक्षेप के शिकार हैं वहीं इन देशों में आंतरिक संकट भी काफी गहरा है। 2007 में प्रारम्भ हुए विश्व आर्थिक संकट ने इन देशों में व्यापक असर डाला है। महंगाई, बेरोजगारी, बढ़ती असमानता ने इन देशों के समाज में राजनैतिक संकट को भी जन्म दिया है। पूर्व समाजवादी देशों में जहां नब्बे के दशक में वैश्विक साम्राज्यवादी संस्थाओं द्वारा 'शॉक थैरेपी' अपनायी गयी थी वहां हालात वर्तमान आर्थिक संकट के साथ और बदतर हो गये। अमेरिकी साम्राज्यवाद और यूरोपीयन यूनियन ने पूर्वी यूरोप के देशों को गहरे सामाजिक-आर्थिक संकट में धकेल दिया है। इन देशों में ऐसी स्थिति में फासीवादी संगठनों का तेजी से उभार हुआ है। यूक्रेन में नव नाजीवादी आंदोलन को पश्चिमी साम्राज्यवादियों का प्रत्यक्ष समर्थन हासिल है।

आइये, पूर्वी यूरोप में साम्राज्यवाद की भूमिका की विविध पहलुओं से सिलेसिलेवार चर्चा करें।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

पूर्वी यूरोप के देशों में आज वे देश शामिल हैं जो या तो एक समय सोवियत संघ के हिस्से थे या फिर जहां एक समय समाजवाद रहा था। यह क्षेत्र पूर्व में कैस्पियन सागर तक फैला हुआ है।

पूर्वी यूरोप के ये देश एक समय सोवियत संघ के हिस्से थेः इस्तोनिया, लाटविया, लिथुवानिया, बेलारूस, यूक्रेन, मोलदोवा, जॉर्जिया, आरमेनिया और अजरबेजान। जॉर्जिया, आरमेनिया और अजरबेजान यूरोप से ज्यादा एशियाई हैं। इन्हें यूरेशियाई कहना ज्यादा उचित है।

पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, हंगरी, रोमानिया और अल्बानिया, बुल्गारिया ऐसे देश थे जहां कभी समाजवाद था परन्तु ये सोवियत संघ के हिस्से नहीं थे। नब्बे के दशक में चेकोस्लोवाकिया जनमत संग्रह के जरिये दो हिस्सों, चेक और स्लोवाकिया में बंट गया। यूगोस्लाविया में यह प्रक्रिया भिन्न ढंग से घटी। आंतरिक संकट, साम्राज्यवादी हस्तक्षेप और षड्यंत्र के चलते यूगोस्लाविया सात हिस्सों में बंट गया। इन देशों के नाम हैः सर्विया, मोंटेनेग्रो, स्लोवेनिया, क्रोशिया, बोस्निया-हर्जेगोविना मकदूनिया और कोसोवो। कमोबेश यही स्थिति जॉर्जिया की रही। दक्षिण ओस्सेशिया और अबखाजिया जॉर्जिया से अलग हो चुके है।

पूर्वी यूरोप के ये सभी देश पिछले दो दशक से गंभीर आर्थिक व सामाजिक संकट के दौर से गुजर रहे हैं। कुछ देशों में यह संकट तीव्र है तो कुछ में मद्धिम। यूगोस्लाविया, जॉर्जिया और यूक्रेन में यह संकट सर्वाधिक तीव्र रूप में प्रस्फुटित हुआ। अन्य देशों में

यह संकट विभिन्न स्तर पर आज न केवल विद्यमान है बल्कि कभी भी ये देश नये किस्म के संकट के शिकार हो सकते हैं। वर्तमान स्थिति में साम्राज्यवाद आक्रामक है और इन देशों का नेतृत्व कमजोर।

पूर्वी यूरोप के अधिकांश देश औद्योगीकृत हैं यद्यपि विकास की विभिन्न अवस्थाओं में खड़े हैं। चेक रिपब्लिक, एस्टोनिया, हंगरी, पोलैण्ड, स्लोवाक रिपब्लिक और स्लोवेनिया विकसित पूंजीवादी देशों के संगठन ओ.ई.सी.डी. (**Organisation for Economic Co-operation and Development**) के सदस्य हैं। आरमेनिया, अजरबेजान, मोंटेनेग्रो, बोस्निया-हर्जेगोविना, कोसोवो जैसे देश पिछड़े और कमजोर हैं।

पूर्वी यूरोप के विकसित देश यूरोपीयन यूनियन के सदस्य हैं। ये देश हैः एस्टोनिया (2004), लाटविया (2004) स्लोवानिया (2004) लिथुवानिया (2004), स्लोवाकिया (2004), चेक रिपब्लिक (2004), हंगरी (2004), पोलैण्ड (2004),रोमानिया (2007), बुल्गारिया (2007), क्रोशिया (2013)। (कोष्ठक में यूरोपीयन यूनियन में शामिल किये जाने का वर्ष दिया हुआ है।)

पश्चिमी साम्राज्यवादियों के सैन्य संगठन नाटो में पूर्वी यूरोप के ये देश (कोष्ठक में वर्ष) शामिल किये जा चुके हैंः चेक रिपब्लिक (1999), हंगरी (1999), पोलैण्ड (1999), बुल्गारिया (1999), एस्टोनिया (1999), लाटविया (1999), लिथुआनिया (2004), रोमानिया (2004), स्लोवाकिया (2004), स्लोवेनिया (2004) अल्बानिया (2009) और क्रोशिया (2009)।

पिछले दो दशक में पश्चिमी साम्राज्यवादियों के आर्थिक-राजनैतिक व सैनिक संगठन का पूर्वी यूरोप में लगातार विस्तार होता गया है। पहले सोवियत संघ के विघटन के द्वारा उत्पन्न स्थिति और फिर रूसी साम्राज्यवादियों की एक दशक से भी अधिक समय तक बेहद कमजोर स्थिति ने, पश्चिमी साम्राज्यवादियों को पूर्वी यूरोप में लगातार बढ़त दिलायी और वे रूसी साम्राज्यवाद की आर्थिक-राजनैतिक-सैनिक घेराबंदी में शीतयुद्ध के दौर से भी काफी आगे निकल चुके हैं। पूर्वी यूरोप में अपना वर्चस्व कायम करने के साथ ही पश्चिमी साम्राज्यवादियों का एक तरह से पूरे यूरोपीय महाद्वीप में दबदबा कायम हो चुका है।

रूसी साम्राज्यवादियों के लिए नब्बे का दशक इतिहास की दृष्टि से 'खोया हुआ दशक' (लॉस्ट डिकेड) साबित हुआ। लगभग दस वर्ष पूर्व से वे पुनः इस स्थिति में आने लगे कि वे पश्चिमी साम्राज्यवादियों को कोई जवाब दे सकें और किसी तरह की सौदेबाजी कर सकें व सोवियत संघ के जमाने के प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में अपनी राजनैतिक-सैनिक स्थिति दर्ज करा सकें। 2004 की रंगीन क्रांतियों का विरोध करते हुए, 2008 में वे इस स्थिति में आ गये कि जॉर्जिया का विभाजन करा सकें और 2014 में यूक्रेन से क्रीमिया को छीन सकें।

रूस ने 1991 में बेलारूस और यूक्रेन के साथ मिलकर कॉमनवेल्थ ऑफ इण्डिपेण्डेंट स्टेट्स (सी.आई.एस.) की स्थापना की। शीघ्र ही इसमें सोवियत संघ के हिस्से रहे आर्मेनिया, अजरबेजान, मोल्दोवा के साथ मध्य एशिया के देश कजाकस्तान, किरगिस्तान, तुर्कमिनिस्तान, ताजिकिस्तान, और उजबेकिस्तान शमिल हो गये। बाद में जॉर्जिया भी सी.आई.एस. का हिस्सा बन गया था।

2004 में पश्चिमी साम्राज्यवादियों के द्वारा प्रायोजित रंगीन क्रांतियों और 2008 के घटनाक्रम के बाद जॉर्जिया, यूक्रेन, तुर्कमिनिस्तान इसके सदस्य नहीं रह गये हैं।

सी.आई.एस. एक ढीला-ढाला संगठन है और इस स्थिति में नहीं रहा है कि कोई प्रभाव छोड़ सके। परन्तु रूस ने अपने प्रयास नहीं छोड़े हैं। उसने कजाकस्तान और बेलारूस के साथ 29 मई,2014 को एक संधि के द्वारा यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन (EaEU) की स्थापना कर दी। संबधित देशों की संसद से मान्यता मिलने के बाद यह आर्थिक संघ 'जनवरी 2015 से अस्तित्व में आ जायेगा। 17 करोड़ जनसंख्या तथा 27 खरब डॉलर के सकल घरेलू उत्पाद वाले इस यूनियन में आरमेनिया, किरगिस्तान, ताजिकिस्तान, उज्बेकिस्तान आदि ने भी शामिल होने का रुख दर्शाया है।

पूर्वी यूरोप के अधिकांश देशों का उन्नीसवीं सदी में कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था। ये सभी किसी न किसी साम्राज्य के हिस्से थे। तुर्की, रूस तथा ऑस्ट्रिया के साम्राज्यों के जुएं के नीचे पिसते इन देशों में सबसे पहले सर्बिया में तुर्की के अत्याचारी शासन के खिलाफ आवाज 1809 में उठी। 1832 में यूनान (ग्रीस) के स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आने के बाद पूर्वी यूरोप के देशों में राष्ट्रवादी और जनवादी ताकतों का तेजी से उदय हुआ। 1856 में सर्बिया और 1862 में रूमानिया का जन्म स्वतंत्र देश के रूप में हुआ। इसके बाद बुल्गारिया, मोंटेनेग्रो आदि देश अस्तित्व में आये परन्तु पहले विश्व युद्ध तक ये सभी कम या ज्यादा किसी न किसी साम्राज्य के हिस्से अथवा प्रभाव क्षेत्र में थे।

पहले विश्व युद्ध और उसी समय रूस में बोल्शेविकों के नेतृत्व में हुई समाजवादी क्रांति का पूर्वी यूरोप के देशों में व्यापक और बुनियादी प्रभाव पड़ा। पहले विश्वयुद्ध में जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी और रूसी साम्राज्य समाप्त हो गये। पहले विश्व युद्ध के बाद पेरिस में हुई संधि के बाद पूर्वी यूरोप में कई नये राष्ट्रों का उदय हुआ। हंगरी, पोलैण्ड, एस्टोनिया, लाटविया, लिथुआनिया, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया (इसमें सार्बिया, मोंटेनेग्रो, बोस्निया, हर्जेगोविना, क्रोशिया तथा डालमेशिया शामिल थे) और रोमानिया पहले विश्व युद्ध के बाद स्वतंत्र देशों के रूप में सामने आये। और कई देश रूस में हुई समाजवादी क्रांति के बाद आत्म निर्णय के अधिकार के साथ सोवियत समाजवादी गणतांत्रिक संघ (यू.एस.एस.आर.) के हिस्से बन गये थे।

पूर्वी यूरोप के नव स्वतंत्र देशों का संकट जर्मनी में हिटलर के फासीवादी उभार के साथ बढ़ता गया। इन देशों में कब्जे के दौरान हिटलर के फासीवादी तंत्र ने व्यापक तबाही फैलायी। फासीवादी तंत्र के खिलाफ लड़ाई में सोवियत संघ के साथ-साथ इन देशों की जनता ने बहुत बड़े पैमाने पर बलिदान दिया। स्टालिन के नेतृत्व में फासीवाद के खिलाफ चले लम्बे संघर्ष का परिणाम हिटलर के पतन के रूप में सामने आया।

दूसरे विश्व युद्ध के समय पूर्वी यूरोप के देशों में जनता की जनवादी क्रांतियों के फलस्वरूप एक के बाद दूसरे देश ने समाजवाद की राह को अपनाया। पूर्वी यूरोप के सभी देश लाल रंग में रंग चुके थे।

इन देशों में गठित समाजवादी सरकारों ने बहुत तेजी से समाज का रूपान्तरण किया। सोवियत संघ ने इस कार्य में उनकी हर तरह से मदद की। लगभग एक दशक के भीतर ही ये समाज दूसरे विश्वयुद्ध की विभीषिका से उबर गये। पूरे समाज का जीवन स्तर ऊपर उठने लगा। तेजी से औद्योगिकीकरण और कृषि का आधुनिकीकरण इस सबमें प्रमुख भूमिका निभा रहा था।

अमेरिकी साम्राज्यवाद के नेतृत्व में पश्चिमी साम्राज्यवाद दूसरे विश्व युद्ध के बावजूद आक्रामक भूमिका में उतरा हुआ था। 1949 में उसने नाटो की स्थापना के साथ पूरे यूरोपीय महाद्वीप में तनाव का माहौल बना दिया था। नाभिकीय हथियारों के दूसरे विश्व युद्ध के समय किये गये प्रयोग ने अमेरिकी साम्राज्यवाद की सैन्य ताकत के वर्चस्व को स्थापित कर दिया था। नाभिकीय और अन्य आधुनिक हथियारों की होड़ छिड़ गयी। यूरोप का सैन्यीकरण दिनोंदिन बढ़ता गया। अमेरिकी साम्राज्यवाद ने इस दौरान पूर्वी यूरोप की सैन्य घेराबंदी से लेकर पतित प्रतिक्रियावादी ताकतों का खुला-छिपा समर्थन जारी रखा। यूनान और स्पेन में फासिस्ट ताकतों को सत्ता में बनाये रखने में भारी मदद दी गयी।

साम्राज्यवाद की गम्भीर चुनौती के साथ पूर्वी यूरोप के समाजवादी समाजों में समाजवाद के निर्माण में अपनी आंतरिक चुनौतियां कम नहीं थी। सोवियत संघ पर इनकी हर तरह की निर्भरता मामले को और गम्भीरता प्रदान कर देती थी। बुर्जुआ राष्ट्रवाद हर देश में जब तब सिर उठाता रहा था। नया पूंजीपति वर्ग जन्म और आकार ले रहा था।

पूर्वी यूरोप में नवस्थापित समाजवाद के सामने सबसे पहले खतरा यूगोस्लाविया के रूप में सामने आया। अमेरिकी व पश्चिमी साम्राज्यवाद से बढ़ती सांठगांठ के साथ समाजवादी खेमे से उसकी दूरी बढ़ती गयी। 1948 के बाद यूगोस्लाविया ने समाजवादी रास्ते का वस्तुतः परित्याग कर दिया। बुर्जुआ राष्ट्रवाद के साथ यूगोस्लाविया ने तथाकथित गुटनिरपेक्षता के साथ पूंजीवादी रास्ते को अपना लिया। यूगोस्लाविया 1948 में ही समाजवादी खेमे से बाहर हो गया और वह एक पूंजीवादी देश बन गया।

समाजवाद को सबसे गम्भीर चुनौती महान सर्वहारा नेता स्टालिन की मृत्यु के बाद सोवियत संघ से ही मिली। 1956 में सोवियत संघ में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना हो गई। सोवियत संघ में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना के साथ समाजवादी खेमे में व्यापक वैचारिक विभ्रम के साथ बिखराव का दौर शुरू हो गया। माओ के नेतृत्व में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने सोवियत नेताओं के गैर सर्वहारा विचारों के खिलाफ निर्णायक संघर्ष छेड़ा। समाजवादी समाज में पूंजीवादी पुनर्स्थापना के भौतिक आधार को सुस्पष्ट करते हुए महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के जरिये सर्वहारा तानाशाही को सुदृढ़ करते हुए समाजवाद की राह में निरंतर आगे बढ़ने का सिद्धान्त प्रस्तुत किया।

सोवियत संघ में पूंजीवाद की पुनर्स्थापना के साथ अल्बानिया को छोड़कर शेष देश पचास के दशक से ही पूंजीवादी पथगामी हो गये। समाजवाद के लबादे को ओढ़े हुए इनमें राजकीय इजारेदार पूंजीवाद कायम हो गया। राजकीय इजारेदार पूंजीवाद के साथ जो राजनीतिक व्यवस्था कायम हुई वह अपने रूप में भले ही समाजवाद को ढो रही थी परन्तु अन्तर्वस्तु में सामाजिक फासीवादी थी। कम्युनिस्ट पार्टियां सर्वहारा व मानव मुक्ति के अभियान और उसे नेतृत्व देने के स्थान पर नव उदित पूंजीपति वर्ग की तानाशाही को कायम करने के यंत्र में तब्दील हो गयी थीं।

समाज में जनवाद की हर अभिव्यक्ति को बलपूर्वक कुचला जाने लगा। एकदलीय शासन प्रणाली के खिलाफ जन आक्रोश के साथ पूंजीपति व मध्यम वर्ग के उन तत्वों का भी आक्रोश था जिन्हें इस तंत्र में अवसर नहीं मिल पाता था। इन वर्गों-तबकों की अपनी विशिष्ट आकांक्षाएं व हित इस बात की मांग करते थे कि यह तंत्र टूटे। साथ ही पश्चिमी साम्राज्यवादी शक्तियां और वे तत्व जो समाजवाद कायम होने के समय देश छोड़कर भाग खड़े हुए थे पुनः सक्रिय थे और लगातार हस्तक्षेप कर रहे थे। समाजवादी रूप व पूंजीवादी अंतर्वस्तु का अंतरविरोध लगातार तीखा होता जा रहा था और वह विस्फोटक स्थिति में पहुंच रहा था।

1956 में पूंजीवादी पुनर्स्थापना के बाद सोवियत संघ तेजी से एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में उभरा। साठ के दशक में चेकोस्लोवाकिया पर किये गये हमले ने उसके चरित्र का उद्घाटन करना शुरू कर दिया। अमेरिकी साम्राज्यवाद के साथ अति आधुनिक हथियारों की दौड़ में वह अधिकाधिक शमिल होता गया। एशिया व अफ्रीका महाद्वीप के विभिन्न देशों में दोनों शक्तियां प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से अपने घृणित हितों को साधने के लिए एक दूसरे से संघर्षरत थीं। पूर्वी यूरोप के देश भी इससे अछूते नहीं थे।

अस्सी का दशक आते-आते सोवियत संघ का पराभव शुरू हो गया और 1989 में उसका विघटन हो गया। सोवियत संघ के विघटन के साथ पूर्वी यूरोप का राजनैतिक मानचित्र एकदम बदल गया। 1989 में शुरू हुई यह प्रक्रिया अभी तक जारी है। चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, जॉर्जिया, यूक्रेन के विभाजन से नये-नये राष्ट्र अस्तित्व में आते चले गये।

यद्यपि अमेरिका सहित पश्चिमी साम्राज्यवाद के विभिन्न देशों की आर्थिक स्थिति बहुत ठीक नहीं थी, सत्तर के दशक से अर्थव्यवस्था ठहराव का शिकार होने लगी थी। परन्तु सोवियत संघ के विघटन और रूस की जटिल व जर्जर अवस्था ने उन्हें पूर्वी यूरोप में बेहतर स्थिति में ला खड़ा किया। यूरोपीयन यूनियन व नाटो में, एक के बाद एक, पूर्वी यूरोप के कई देशों को शामिल किया जाने लगा। पूर्वी यूरोप के रूप में उन्हें कच्चे माल, कृषि उपज, प्राकृतिक संसाधनों, बाजार और पूंजी निवेश का एक बड़ा क्षेत्र हासिल हो गया। रूसी साम्राज्यवादी ऐसी स्थिति में मन मसोसकर हाथ मलते रह गये।

'शॉक थैरेपी' के नाम पर नव उदारवादी नीतियां थोपने के जरिये पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों और उनकी संस्थाओं ने इन देशों की अर्थव्यवस्था को दुरूस्त करने की जो कोशिशें की थी उसने कोढ़ में खाज का ही काम किया। उच्च बेरोजगारी दर, बढ़ती महंगाई व

सामाजिक असमानता के साथ भाषा, नस्ल, धर्म और राष्ट्रीयता की समस्यायें पुनः उठ खड़ी हुईं। पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों के हस्तक्षेप से समस्या और गहराती चली गयी।

अमेरिका, जर्मनी व फ्रांस ने यूगोस्लाविया के बंटवारे के लिए हर तरह के छल-प्रपंच का सहारा लिया और 1995 से नाटो के नेतृत्व में चला सैन्य हस्तक्षेप 2008 तक जारी रहा। 1992-93 में बोस्निया-हर्जेगोविना में मुस्लिम अल्पसंख्यकों का व्यापक पैमाने पर नरसंहार किया गया और इस मौके पर साम्राज्यवादी ताकतों ने खामोशी का ही रुख अख्तियार किया। 1999 में सार्बिया पर नाटो के द्वारा किये गये हमलों में सैकड़ों की संख्या में लोग मारे गये। पुल, सड़क, अस्पताल, विश्वविद्यालय तक को नाटो ने हवाई हमलों से पूर्णतया नष्ट कर डाला। अपने सैन्य अड्डे बनाने व बेहतर भू-राजनैतिक स्थिति हासिल करने के लिए 2008 में सार्बिया से छीनकर कोसोवो को एक अलग राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में लाने में अमेरिकी साम्राज्यवाद की ही भूमिका प्रमुख रही है। यूगोस्लाविया के विकसित पूंजीवादी हिस्सों स्लोवेनिया व क्रोशिया को यूरोपीय यूनियन व नाटो में शामिल कर लिया गया। शेष क्षेत्र जो कि गम्भीर राजनैतिक, आर्थिक व सामाजिक संकट के शिकार थे उन्हें उनके भाग्य के सहारे छोड़ दिया गया।

रूस को सोवियत संघ के विघटन के बाद उपजी विषम परिस्थिति से उबरने में एक दशक से भी अधिक का समय लग गया। तेल व प्राकृतिक गैस सम्पदा और उच्च सैन्य हथियारों की सप्लाई के दम पर रूसी साम्राज्यवादी, विश्व के राजनैतिक पटल पर, एक सशक्त आवाज बनकर पिछले दशक में पुनः उभरने लगे। उनके साथ पश्चिमी साम्राज्यवाद ने दोहरी नीति अपनायी हुई थी। एक तरफ वे रूस की सैनिक व आर्थिक घेराबंदी कर रहे थे तो दूसरी तरफ वे उसे वैश्विक संस्थाओं व संगठनों में स्थान देने लगे। लेकिन रूस अपनी खोई हुई हैसियत के लिए निरंतर प्रयत्नशील था और उसने वर्ष 2004 से आक्रामक नीतियां अपनानी शुरू कर दी। वह पश्चिमी साम्राज्यवाद को चुनौती देने लगा। पूर्वी यूरोप के वर्तमान संकट को इसी पृष्ठभूमि में समझा जा सकता है।

वर्तमान संकट और उसका चरित्र

पूर्वी यूरोप का वर्तमान संकट बहु आयामी है। दशकों से छाया आर्थिक राजनैतिक व सामजिक संकट वर्तमान वैश्विक आर्थिक संकट के साथ गहराता चला जा रहा है। साम्राज्यवादी हस्तक्षेप के कारण यह संकट और गम्भीर होता जाता है।

पूर्वी यूरोप में विकसित पूंजीवादी देशों से लेकर पिछड़े व अल्प विकसित पूंजीवादी देश शामिल हैं। इस दृष्टि से देखें तो पूर्वी यूरोप में समानतायें कम भिन्नताएं कहीं ज्यादा हैं। समाजवादी अतीत और निरन्तर साम्राज्यवादी हस्तक्षेप के कारण ही कुछ समानताएं पैदा होती हैं अन्यथा पूंजीवादी विकास, नस्ल, भाषा, धर्म समुदाय राष्ट्रीयता आदि के आधार पर भिन्नताएं बहुत अधिक हैं।

पूर्वी यूरोप के देशों में समाजवादी अतीत के कारण पश्चिमी ढंग का पूंजीवादी विकास नहीं रहा है। इसके उलट यहां पूंजीवादी विकास मूलतः समाजवादी रूप के भीतर द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उस काल में हुआ है जब इन देशों में वास्तव में समाजवाद नहीं रह गया था।

पहले विश्व युद्ध के पहले यह इलाका तुर्की, रूसी या ऑस्ट्रियाई साम्राज्यों का हिस्सा था। ये साम्राज्य पूंजीवादी विकास की दृष्टि से स्वयं काफी पिछड़े हुए थे। इन साम्राज्यों के पतन के बाद ही इन क्षेत्रों में पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली का तीव्र विकास प्रारम्भ हुआ। औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई। समाज का ढांचा पूंजीवादी वर्गीय संरचना के अनुरूप होता चला गया। यहां भी यह ध्यान रखना होगा कि इस काल में पूर्वी यूरोप के देश पूंजीवादी विकास की दृष्टि से अलग-अलग पायदान पर खड़े थे। पोलैण्ड, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया जैसे देशों की स्थिति पश्चिमी यूरोप की विकास के स्तर के ज्यादा करीब थी जबकि यूगोस्लाविया काफी पिछड़ा हुआ था। जो देश सोवियत संघ के हिस्से बने थे उनकी विकास यात्रा एकदम भिन्न रही है। समाजवादी काल में इन देशों में तेजी से औद्योगिकीकरण हुआ। इन देशों में पूंजीवादी पुनर्स्थापना करने वाले वर्ग का जन्म समाजवादी काल में हुआ था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूर्वी यूरोप के अन्य देशों में भी जनता की जनवादी क्रांतियों के जरिये समाजवाद स्थापित हुआ। इन देशों ने सोवियत संघ के ही रास्ते को पकड़ा। सोवियत संघ में हुई पूंजीवादी पुनर्स्थापना के साथ-साथ पूर्वी यूरोप के देशों में भी पूंजीवाद की पुनर्स्थापना हो गयी और ये समाज राजकीय इजारेदार पूंजीवाद में तब्दील हो गये। इन समाजों में पूंजीपति वर्ग कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं, नौकरशाहों, मैनेजरों, तकनीशियनों, बुद्धिजीवियों आदि से पनपा। अस्सी नब्बे के दशक में इन समाजों में समाजवादी रूप और पूंजीवादी अंतर्वस्तु का अंतरविरोध विस्फोटक अवस्था में पहुंच गया।

पूंजीवादी अंतर्वस्तु के अनुरूप पूंजीवादी रूप होने की प्रक्रिया के दौरान समाज में भारी उथल-पुथल मची। इस दौरान राज्य की सम्पत्ति की बंदरबांट शुरू हुई। इस बंदरबांट के दौरान पश्चिमी साम्राज्यवादियों के सहयोग से एकाधिकारी चरित्र के पूंजीपतियों की एक छोटी सी जमात पैदा हो गयी। इस छोटी सी जमात ने एक तरह से पूरे देश की औद्योगिक, वित्तीय और प्राकृतिक सम्पदा पर कब्जा कर लिया। बहुराष्ट्रीय निगमों और वित्तीय संस्थाओं के लिए द्वार खोलने के साथ समाज में तेजी से असमानता फैली और वर्गीय ध्रुवीकरण तीव्र हो गया। दबे हुए सामाजिक तनाव सतह पर आ गये।

पूर्वी यूरोप के उन देशों में सामाजिक संकट ने ज्यादा उग्र रूप धारण कर लिया जो बहुराष्ट्रीय,बहुभाषी, बहुनस्लीय या बहुधार्मिक थे। गहरे आर्थिक व सामाजिक संकट ने इन विशेष देशों में असमाधेय सामाजिक तनावों को जन्म दे दिया। ये सामाजिक तनाव समाजवादी काल में कुशलतापूर्वक हल कर लिये गये थे। यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया व सोवियत संघ में समाजवाद के दौरान राष्ट्रीयताओं को आत्मनिर्णय का अधिकार हासिल था। विशिष्ट भाषा, संस्कृति, रीति रिवाजों, धर्म आदि के आधार पर कोई भी भेद

संभव नहीं था। राष्ट्रीयताओं के आत्मनिर्णय के आधार पर गठित ये संघ सभी राष्ट्रीयताओं, भाषायी समूहों, अल्पसंख्यकों के साथ न्याय करते थे। सर्वहारा वर्ग की वर्गीय एकता उन्हें एक सूत्र में बांधती थी।

यहां तक कि ये अंतरविरोध उस काल में भी सुप्त ही थे जब इन समाजों में पूंजीवादी पुनर्स्थापना के बाद समाजवाद केवल रूप में मौजूद था। नब्बे के दशक में सोवियत संघ के विघटन के साथ न केवल सोवियत संघ में बल्कि अन्य देशों में भी राष्ट्रीयता,भाषायी समूहों, अल्पसंख्यकों आदि की समस्या मुखर रूप धारण करते हुए विकराल होती चली गयी। उत्पीड़ित राष्ट्रीयताएं,भाषायी समूह, धार्मिक अल्पसंख्यकों आदि के बीच नयी परिस्थितियों में असुरक्षा की भावना हर रोज बढ़ती चली गयी। इसमें इन उत्पीड़ित समुदायों के बुर्जुआ तत्वों की भी अहम भूमिका थी। वे अपने लिए विशिष्ट सुविधाओं से कहीं अधिक विशिष्ट राष्ट्र-राज्य चाहते थे। इन बुर्जुआ तत्वों को पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों ने अपने कुटिल व घृणित हितों की खातिर पूरी शह दी।

संशोधनवादी कम्युनिस्ट पार्टियों का नब्बे के दशक में पूर्वी यूरोप के देशों में तेजी से सफाया हुआ। अधिकांश कम्युनिस्ट पार्टियों ने अपने नाम तक बदल लिये। इस तरह से उन्होंने भी अंतर्वस्तु के अनुरूप ही रूप धारण कर लिया। इन पार्टियों के सफाये या नाम बदलने की प्रक्रिया के साथ इन सभी देशों में घोर दक्षिणपंथी तथाकथित राष्ट्रवादी पार्टियों का उदय हुआ। एकदलीय तंत्र के स्थान पर कायम हुए बहुदलीय पश्चिमी पूंजीवादी लोकतंत्र में प्रगतिशील वामपंथी या क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टियों का कहीं कोई स्थान नहीं था। गहराते आर्थिक व सामाजिक संकट के साथ हाल के वर्षों में इन देशों में फासीवादी व नव-नाजीवादी पार्टियों व संगठनों का भी तेजी से उभार हुआ है। पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों में भी इन पार्टियों का विस्तार व प्रभाव बढ़ा है।

पूर्वी यूरोप के देशों में रूसी साम्राज्यवादियों के प्रति फैली गहरी घृणा व आशंकाओं का पश्चिमी साम्राज्यवादियों ने नब्बे के दशक से ही भयादोहन शुरु कर दिया था। षड्यंत्रकारी ढंग से वे नाटो का विस्तार करते चले गये। रूसी साम्राज्यवादी पूर्वी यूरोप में लगातार अलग-थलग पड़ते चले गये। उनकी योजनायें रूसी कॉमनवेल्थ और बदले रूप में वारसा सैन्य संगठन को खड़े करने की थी ताकि वे नाटो का मुकाबला कर सकें परन्तु वे इसमें अंशत: ही कामयाब हो पाये। अब जाकर कहीं वे यूरेशियन यूनियन बनाने में सफल हुए हैं।

यूगोस्लाविया व चेकोस्लोवाकिया जैसे देशों में राष्ट्रीयता की समस्या पूर्व सोवियत संघ के देशों लाटविया, जॉर्जिया, यूक्रेन से एकदम भिन्न रही है। चेकोस्लोवाकिया का विभाजन अपेक्षाकृत शांतिपूर्ण ढंग से मतदान के जरिये हुआ जबकि यूगोस्लाविया के विभाजन की प्रक्रिया एक दशक से भी अधिक समय तक चली। और यह पूरा दशक खून से सना हुआ था।

लाटविया, जॉर्जिया, यूक्रेन आदि में समस्या का एक पहलू इन देशों में बसी रूसी भाषा बोलने वाली आबादी से जुड़ा हुआ है। इस आबादी को बदली हुई परिस्थिति में भाषाई उत्पीड़न से लेकर सामाजिक अलगाव का शिकार होना पड़ा है। लाटविया में तो एक बड़ी संख्या को नागरिकता तक प्राप्त नहीं है। उन्हें तथाकथित रूप से "नॉन-सिटीजन" कहा जाता है। लाटविया में करीबन ऐसे 300,000 रूसी भाषी हैं जो कि लाटविया की आबादी का करीब 13 फीसदी बनते हैं। रूसी भाषी लोगों को लाटविया की नागरिकता हासिल करने के लिए लाटवियाई भाषा व संस्कृति के ज्ञान होने का प्रमाण देना पड़ता है। ऐसे कदमों से रूसी भाषी लोगों में गहरा असंतोष है। वे अपने आपको लाटविया का स्वाभाविक नागरिक मानते हैं जिनके साथ कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए। यूक्रेन के वर्तमान संकट में भी भाषा व संस्कृति की एक प्रमुख भूमिका है। यूक्रेन के तथाकथित राष्ट्रवादी तत्वों द्वारा जबरन यूक्रेनी भाषा व संस्कृति यूक्रेन के पूर्वी व दक्षिणी क्षेत्रों में थोपी जा रही थी। यहां रूसी भाषी समुदायों का उत्कृष्टता का भाव भी अपनी भूमिका अदा करता है। वे अपने को श्रेष्ठ और उच्च संस्कृति का वाहक समझते हैं। शासक होने की मानसिकता तथा रूस का पुनरुत्थान इसमें एक भूमिका निभाता है।

पूर्व सोवियत संघ के देशों में आज भी भारी संख्या में रूसी भाषी आबादी निवास करती है। इस्टोनिया, लाटविया कजाकस्तान में तो रूसी भाषी आबादी कुल आबादी में एक चौथाई तक है। (निम्न चित्र को देखें)। यद्यपि ये

नक्सा-1 पूर्व सोवियत गणराज्यों में रूसी आबादी

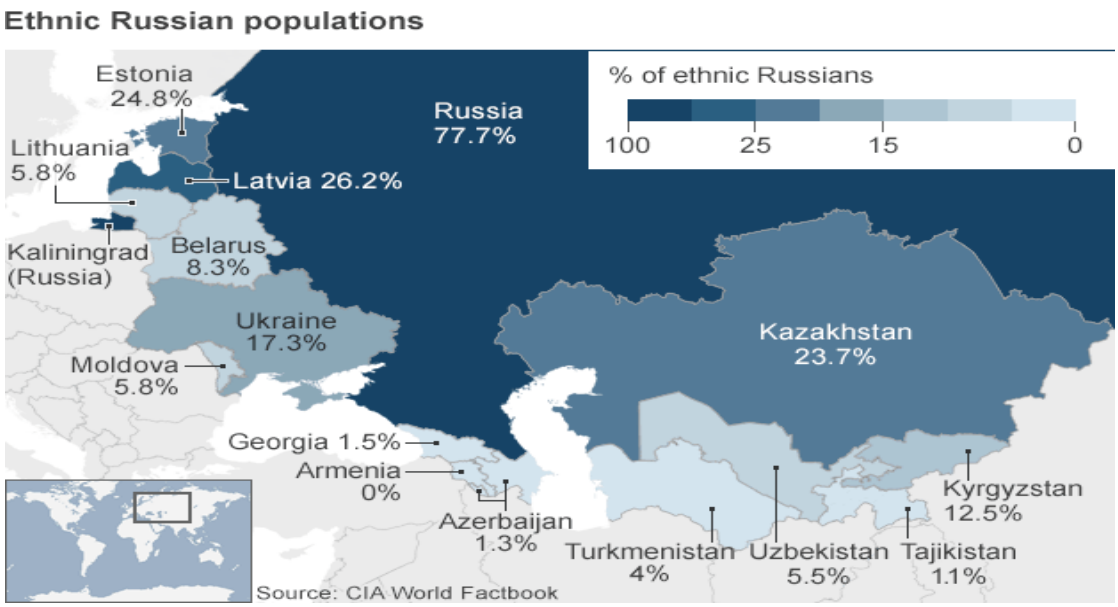

आंकड़े अलग-अलग अनुमानों में अलग-अलग भी है। लाटविया की एक संस्था एस.आंकड़े अलग-अलग भी हैं। लाटविया की एक संस्था के.डी.एम. के अनुसार लाटविया में रूसी भाषियों की संख्या लाटविया की आबादी में 42 फीसदी है जिनमें से 58 फीसदी लाटवियाई मूल के हैं।

रूसी साम्राज्यवादी इन रूसी भाषियों के नाम पर पड़ोसी देशों में जब-तब हस्तक्षेप करते हैं। जॉर्जिया में 2008 और यूक्रेन में 2008 और फिर 2014 में रूसी साम्राज्यवादियों ने रूसी भाषियों के हितों की सुरक्षा के नाम पर ही हस्तक्षेप किया था।

इसी तरह पश्चिमी साम्राज्यवादियों के द्वारा पूर्वी यूरोप के देशों में हस्तक्षेप की वजह रूसी साम्राज्यवादियों की मंशा व इन देशों के शासकों में कायम रूसी हस्तक्षेप की आशंका से उत्पन्न होने वाले भय आदि को बनाया जाता है। पूर्वी यूरोप के ढेरों देशों को नाटो में शामिल करने और जॉर्जिया, यूक्रेन को नाटो में शामिल करने के प्रयास पश्चिमी साम्राज्यवादी लगातार कर रहे हैं। पश्चिमी साम्राज्यवादियों की निरंतर आक्रामक स्थिति ने रूसी साम्राज्यवादियों को भी उकसाया है और वे अपने हितों की सुरक्षा के लिए आक्रामक मुद्रा अपनाये हुए हैं।

पूर्वी यूरोप के देशों की अपनी सामाजिक स्थिति और साम्राज्यवादी हस्तक्षेप के अलावा गहरे आर्थिक संकट ने भी इन देशों को ऐसी जगह में धकेला हुआ है जहां सामाजिक तनाव विस्फोटक स्थिति में पहुंच गया है।

2008 से जारी आर्थिक संकट ने यूरोप को अत्याधिक प्रभावित किया है। पूर्वी यूरोप के देशों में इस संकट की वजह से विदेशी निवेश बुरी तरह प्रभावित हुआ। विदेशी निवेशकों के हाथ खींचने से इन देशों की अर्थव्यवस्थाओं के उभरने की संभावना पर प्रश्न चिह्न लगा हुआ है। मुद्रा का अवमूल्यन, मुद्रास्फीति की उच्च दर, बढ़ता बजट घाटा और निर्यात में आयी भारी कमी ने भी इन देशों को गम्भीर रूप से प्रभावित किया है।

उच्च बेरोजगारी दर और गिरती मजदूरी ने व्यापक आबादी के जीवन स्तर और उसकी क्रय शक्ति को नीचे गिरा दिया है। सामाजिक सेवाओं में साम्राज्यवादी संस्थाओं के दबाव में की जा रही कटौतियों से हालात और बदतर हुए हैं। पूर्वी यूरोप के देशों में छाये संकट को आगे प्रस्तुत तालिकाओं के जरिये समझा जा सकता है।

कुल मिलाकर देखा जाय तो पूर्वी यूरोप के देशों का संकट विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के सर्वग्रासी संकट की ही एक अभिव्यक्ति है। इन सभी देशों में पूंजीवादी व्यवस्था के द्वारा उत्पन्न संकट ने ही सामाजिक तनाव और विग्रहों को जन्म दिया है। राजकीय इजारेदार पूंजीवाद से खुले-छुट्टे पूंजीवाद में रूपान्तरण से इन समाजों की किसी भी समस्या का समाधान नहीं हुआ और उल्टे इन्हें अपनी सम्प्रभुता को भी दांव पर लगाना पड़ा है। कई देश तो विखण्डित हो गये।

साम्राज्यवाद के लगातार हस्तक्षेप ने इन देशों की जनता खासकर मजदूर वर्ग के जीवन को पहले से भी ज्यादा बदहाल कर दिया है। ये देश पश्चिमी और रूसी साम्राज्यवादियों के बीच शक्ति परीक्षण और सौदेबाजी के क्षेत्र बन गये हैं। पूर्वी यूरोप के देशों की जनता इन सबके नीचे पिस रही है। यूक्रेन तो फिलहाल कई महीनों से गृहयुद्ध के चंगुल में फंसा हुआ है। पश्चिमी यूक्रेन और पूर्वी यूक्रेन का विभाजन साम्राज्यवादियों के हस्तक्षेप के कारण एक वास्तविकता बनता जा रहा है।

तालिका–1

पूर्वी यूरोप के चुने हुए देश : वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद, उपभोक्ता मूल्य, चालू खाता संतुलन और बेरोजगारी

Real GDP, Consumer prices, Current Account Balance, and Unemployment

	वास्तविक स.घ.उत्पाद			उपभोक्ता मूल्य			चालू खाता संतुलन			बेरोजगारी		
	Real GDP			Consumer Prices			Current Account Balance			Unemployment		
	Projections			Projections			Projections			Projections		
	2011	2012	2013	2011	###	###	2011	2012	2013	2011	2012	2013
Europe	**2.0**	**0.2**	**1.4**	**3.2**	**2.7**	**2.2**	**0.5**	**0.6**	**0.8**	–	–	–
Advance Europe	**1.4**	**-0.1**	**1.1**	**2.8**	**2.1**	**1.7**	**1.1**	**1.3**	**1.5**	**9.4**	**10.0**	**9.9**
Euro Area	1.4	-0.3	0.9	2.7	2.0	1.6	-0.3	0.7	1.0	10.1	10.9	10.8
Germany	3.1	0.6	1.5	2.5	1.9	1.8	5.7	5.2	4.9	6.0	5.6	5.5
France	1.7	0.5	1.0	2.3	2.0	1.6	-2.2	-1.9	-1.5	9.7	9.9	10.1
Italy	0.4	-1.9	-0.3	2.9	2.5	1.8	-3.2	-2.2	-1.5	8.4	9.5	9.7
Spain	0.7	-1.8	0.1	3.1	1.9	1.6	-3.7	-2.1	-1.7	21.6	24.2	23.9
Netherlands	1.3	-0.5	0.8	2.5	1.8	1.8	7.5	8.2	7.8	4.5	5.5	5.5
Belgium	1.9	0.0	0.8	3.5	2.4	1.9	-0.1	-0.3	0.4	7.2	8.0	8.3
Austria	3.1	0.9	1.8	3.6	2.2	1.9	1.2	1.4	1.4	4.2	4.4	4.3
Greece	-6.9	-4.7	0.0	3.1	-0.5	-0.3	-9.7	-7.4	-6.6	17.3	19.4	19.4
Portugal	-1.5	-3.3	0.3	3.6	3.2	1.4	-6.4	-4.2	-3.5	12.7	14.4	14.0

Finland	2.9	0.6	1.8	3.3	2.9	2.1	-0.7	-1.0	-0.3	7.8	7.7	7.8
Ireland	0.7	0.5	2.0	1.1	1.7	1.2	0.1	1.0	1.7	14.4	14.5	13.8
Slovak Republic	3.3	2.4	3.1	4.1	3.8	2.3	0.1	-0.4	-0.4	13.4	13.8	13.6
Slovenia	-0.2	-1.0	1.4	1.8	2.2	1.8	-1.1	0.0	-0.3	8.1	8.7	8.9
Luxembourg	1.0	-0.2	1.9	3.4	2.3	1.6	6.9	5.7	5.6	6.0	6.0	6.0
Estonia	7.6	2.0	3.6	5.1	3.9	2.6	3.2	0.9	-0.3	12.5	11.3	10.0
Cyprus	0.5	-1.2	0.8	3.5	2.8	2.2	-8.5	-6.2	-6.3	7.8	9.5	9.6
Malta	2.1	1.2	2.0	2.4	2.0	1.9	-3.2	-3.0	-2.9	6.4	6.6	6.5
United Kingdom	0.7	0.8	2.0	4.5	2.4	2.0	-1.9	-1.7	-1.1	8.0	8.3	8.2
Sweden	4.0	0.9	2.3	1.4	2.5	2.0	6.7	3.0	2.9	7.5	7.5	7.7
Switzerland	1.9	0.8	1.7	0.2	-0.5	0.5	14.0	12.1	11.6	3.1	3.4	3.6
Czech Republic	1.7	0.10	2.1	1.9	3.5	1.9	-2.9	-2.1	-1.9	6.7	7.0	7.4
Norway	1.7	1.8	2.0	1.3	1.5	2.0	14.6	14.8	13.7	3.3	3.6	3.5
Denmark	1.0	0.5	1.2	2.8	2.6	2.2	6.2	4.8	4.5	6.1	5.8	5.5
Iceland	3.1	2.4	2.6	4.0	4.8	3.5	-6.5	-2.8	-1.5	7.4	6.3	6.0
Emerging Europe	**5.3**	**1.9**	**2.9**	**5.3**	**6.2**	**4.5**	**-6.0**	**-5.6**	**-5.5**	**-**	**-**	**-**
Turkey	8.5	2.3	3.2	6.5	11	7.1	-9.9	-8.8	-8.2	9.9	10.3	10.5
Poland	4.3	2.6	3.2	4.3	3.8	2.7	-4.3	-4.5	-4.3	9.6	9.4	9.1
Romania	2.5	1.5	3.0	5.8	2.9	3.1	-4.2	-4.2	-4.7	7.2	7.2	7.1
Hungary	1.7	0.0	1.8	3.9	5.2	3.5	1.6	3.3	1.2	11.0	11.5	11.0
Bulgaria	1.7	0.8	1.5	3.4	2.1	2.3	1.9	2.1	1.6	12.5	12.5	12.0
Serbia	1.8	0.5	3.0	11.2	4.1	4.3	-9.1	-8.6	-7.9	23.7	23.9	23.6
Croatia	0.0	-0.5	1.0	2.3	2.2	2.4	0.9	0.4	-0.2	13.2	13.5	12.7
Lithuania	5.9	2.0	2.7	4.1	3.1	2.5	-1.7	-2	-2.3	15.5	14.5	13.0
Latvia	5.5	2.0	2.5	4.2	2.6	2.2	-1.2	-1.9	-2.5	15.6	15.5	14.6

(स्रोत : आई.एम.एफ., अप्रैल 2012)

तलिका–2												
संक्रमणकालीन अर्थव्यवस्थाएं : वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की विकास दर 2012-13												
Economics in trasition : rates of Grouth of Real GDP, 2012-13												
Annual Percentage change a												
	2003-2010a	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011 b	2012 c	2013
Economies in transition	**4.7**	**7.3**	**7.7**	**6.5**	**8.4**	**8.6**	**5.1**	**-6.6**	**4.1**	**4.1**	**3.9**	**4.1**
South -Eastern Europe	3.2	4.3	5.6	4.7	5.2	6.0	4.2	-3.7	0.6	1.7	2.3	3.2
Albania	5.3	5.7	5.7	5.8	5.4	5.9	7.7	3.3	3.5	3.0	3.0	3.9
Bosnia and Herzegovina	3.7	3.9	6.3	3.9	6.0	6.2	5.7	-2.9	0.8	2.1	2.0	2.3
Croatia	1.8	5.4	4.1	4.3	4.9	5.1	2.2	-6.0	-1.2	0.8	2.0	3.0
Montenegro	4.4	2.5	4.4	4.2	8.6	10.7	6.9	-5.7	2.5	2.3	2.5	3.8
Serbia	4.3	2.4	8.3	5.6	5.2	6.9	5.5	-3	1.8	2.2	2.5	3.6
The former yugoslav Republic of Macedonia	3.7	2.8	4.6	4.4	5.0	6.1	5.0	-0.9	1.8	3.0	3.0	3.4

Commonwealth of independent States and Georgia d	4.9	7.6	7.9	6.7	8.7	8.8	5.2	-6.9	4.5	4.3	4.0	4.2
Net Fuel Exporters	4.9	7.4	7.4	6.9	8.8	8.9	5.3	-6.4	4.4	4.2	4.1	4.2
Azerbaijan	16.9	11.2	10.2	26.4	34.5	25.1	10.8	9.3	5.0	0.9	4.0	3.9
Kazakhstan	7.1	9.3	9.6	9.7	10.6	8.7	3.3	1.2	7.0	6.5	5.8	5.9
Russian Federation	4.4	7.3	7.2	6.4	8.2	8.5	5.2	-7.8	4.0	4.0	3.9	4.0
Turkmenistan	10.0	3.3	5.0	13.0	11.0	11.1	14.7	6.1	9.2	9.7	7.0	7.0
Uzbekistan	8.2	4.4	7.7	7.0	7.3	9.5	9.0	8.1	8.5	7.3	7.0	7.0
Net fuel importers	4.5	9.1	11.4	4.9	8.1	8.4	4.6	-9.8	5.1	4.7	3.2	4.2
Armenia	6.2	14.0	10.5	13.9	13.2	13.7	6.9	-14	2.1	4.3	4.1	4.4
Belarus	8.1	7.0	11.4	9.4	10.0	8.6	10.2	0.2	7.6	4.8	1.0	3.5
Georgia d	5.9	11.1	5.9	9.6	9.4	12.3	2.3	-3.8	6.4	5.5	5.0	4.7
Kyrgyzstan	4.4	7.0	7.0	-0.2	3.1	8.5	8.4	2.9	-1.4	6.0	5.4	5.0
Republic of Moldova	4.0	6.6	7.4	7.5	4.8	3.0	7.8	-6.0	6.9	5.5	3.9	4.3
Tajkistan	7.1	11.1	10.3	6.7	6.6	7.8	7.6	4.0	6.5	6.0	5.7	6.0
Ukraine	2.8	9.6	12.1	20.7	7.3	7.9	2.3	-15	4.2	4.4	3.8	4.3

Note: country groups are calculated as a weighted average of individual country growth rates of gross domestic products (GDP), where weights are based on GDP in 2005 prices and exchange rates.
a Average percentage change.
b Partly estimated.
c Baseline scenario forecasts, based in part on project LINK and UN/DESA World Economic Forecasting Model.
d Georgia officially left the commonwealth of independent states on 18 august 2009. However, its performance is discussed in the context of this group of countries for reason of geographic proximity and similarities in economic structure.

(स्त्रोत : World Economic Situation and prospects 2012)

तालिका–3

चुने हुए पूर्व यूरोप के देश : बेरोजगारी 2003-2013

Unemployment rates, a b 2001-2013

Percentage of labour force

	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011c	2012d	2013d
Devloped Economies	**7.4**	**7.2**	**6.9**	**6.3**	**5.8**	**6.1**	**8.4**	**8.8**	**8.6**	**8.5**	**8.3**
United Ststes	6.0	5.5	5.1	4.6	4.6	5.8	9.3	9.6	9.1	9.2	9.1
Canada	7.6	7.2	6.8	6.3	6	6.1	8.3	8.0	7.6	7.4	7.1
Japan	5.3	4.7	4.4	4.1	3.9	4.0	5.1	5.1	5.0	4.1	4.1
Austeralia	5.9	5.4	5.0	4.8	4.4	4.2	5.6	5.2	5.6	5.7	5.7
New Zealand	4.8	4.1	3.8	3.9	3.7	4.2	6.1	6.5	6.1	5.5	5.6
Europen Union	**9.1**	**9.2**	**9.0**	**8.2**	**7.3**	**7.1**	**9.0**	**9.8**	**9.6**	**9.6**	**9.3**
Eu 15	8.1	8.3	8.3	7.8	7.2	7.2	9.1	9.6	9.5	9.6	9.4
Austria	4.3	4.9	5.2	4.7	4.4	3.8	4.8	4.4	4.1	4.3	4.2
Belgium	8.2	8.4	8.5	8.3	7.5	7.0	7.9	8.3	7.3	8.2	7.7
Denmark	5.4	5.5	4.8	3.9	3.8	3.4	6.1	7.4	7.5	7.3	7.1
Finland	9.1	8.9	8.3	7.7	6.9	6.4	8.2	8.4	7.9	7.4	7.0
France	9.0	9.2	9.3	9.2	8.4	7.8	9.5	9.8	9.8	9.9	9.6
Jermany	9.8	10.5	11.2	10.1	8.8	7.6	7.7	7.1	6.2	6.0	6.0
Greece	9.7	10.5	9.9	8.9	8.3	7.7	9.5	12.6	14.8	17.4	17.6
Ireland	4.6	4.5	4.4	4.5	4.6	6.3	11.9	13.7	14.3	14.5	14.9
Italy	8.5	8.0	7.7	6.8	6.1	6.8	7.8	8.4	8.1	8.5	8.3
Luxembourg	3.8	5.0	4.6	4.6	4.2	4.9	5.1	4.6	4.7	5.0	4.8
Netherlands	4.1	5.1	5.3	4.3	3.6	3.1	3.7	4.5	4.2	4.2	4.0
Portugal	7.1	7.5	8.6	8.6	8.9	8.5	10.6	12	12.5	13.4	14.0
Spain	11.1	10.6	9.2	8.5	8.3	11.4	18	20.1	20.8	20.5	19.9

Sweden	6.6	7.4	7.7	7.1	6.1	6.2	8.3	8.4	7.5	7.5	7.3
United Kingdom	5.0	4.7	4.8	5.4	5.3	5.6	7.6	7.8	8.0	8.5	8.1
New EU Member States	12.9	12.8	11.9	10.0	7.6	6.5	8.4	10.6	10.2	9.6	9.0
Bulgaria	13.7	12.1	10.1	9.0	6.9	5.6	6.8	10.2	11.8	11.4	10.8
Cyprus	4.1	4.6	5.3	4.6	3.9	3.7	5.3	6.2	7.2	7.3	7.0
Czech Republic	7.8	8.3	7.9	7.2	5.3	4.4	6.7	6.0	6.8	6.6	6.2
Estonia	10.0	9.7	7.9	5.9	4.7	5.5	13.8	16.9	12.6	10.9	9.1
Hungary	5.9	6.1	7.2	7.4	7.4	7.8	10.1	11.2	11.0	10.5	9.0
Latvia	10.5	10.4	8.9	6.8	6.0	7.5	17.1	18.7	16.0	15.0	13.8
Lathuania	12.5	11.4	8.3	5.6	4.3	5.8	13.7	17.8	15.4	13.6	11.5
Malta	7.7	7.2	7.3	6.9	6.5	6.0	6.9	6.9	7.0	6.6	6.7
Poland	19.7	19	17.8	13.9	9.6	7.1	8.2	12.1	11.3	10.1	9.8
Romania	6.8	8.0	7.2	7.3	6.4	5.8	6.9	7.3	7.3	7.0	6.5
Slovakia	17.6	18.2	16.2	13.4	11.1	9.5	12	14.4	13.4	13.8	13.6
Slovenia	6.7	6.3	6.5	6.0	4.9	4.4	5.9	7.3	8.0	8.0	7.5

(स्रोत : वही)

पूर्वी यूरोप के देशों में मूलतः दो बुनियादी अंतरविरोध काम कर रहे हैं:

पहला, इन देशों में श्रम और पूंजी का अंतरविरोध तथा दूसरा, इन देशों की जनता और साम्राज्यवाद के बीच का अंतरविरोध।

दुनिया के पैमाने पर जारी साम्राज्यवादी देशों का आपसी अंतरविरोध इन दोनों बुनियादी अंतरविरोधों को प्रभावित कर रहा है।

इन तीनों अंतरविरोधों के कारण पूर्वी यूरोप के देश पूरी दुनिया में प्रमुख तनाव केन्द्र वाला क्षेत्र बने हुए हैं। यहां का संकट बेहद जटिल और स्थिति बेहद अस्थिर बनी हुई है जो कभी भी विस्फोटक रूप धारण कर सकती है।

तालिका–4

संक्रमणकालीन अर्थव्यवस्थाएं: उपभोक्तामूल्य मुद्रास्फीति 2003-2013

(Economies in transition : consumer price inflation, 2003-2013)

Annual Percentage change

	2003	2004	2005	2006	2007	2008	2009	2010	2011 b	2012 c	2013 c
Economies in Transition	**11.7**	**9.9**	**11.7**	**9.1**	**9.0**	**14.5**	**10.6**	**6.7**	**9.2**	**7.5**	**6.6**
South Eastern Europe	3.7	4.1	6.4	5.7	3.6	7.8	3.5	2.8	5.0	3.4	3.3
Albania	0.5	2.3	2.4	2.4	2.9	3.3	2.3	3.6	3.8	3.6	3.2
Bosnia and Herzegovina	0.5	0.3	3.6	6.1	1.5	7.4	-0.3	2.1	4.0	3.0	3.0
Croatia	1.8	2.0	3.3	3.2	2.9	6.0	2.4	1.1	2.3	2.7	2.8
Montenegro	6.7	2.1	2.7	3.0	4.3	9.0	3.8	0.5	3.5	3.0	3.0
Serbia	9.9	11.0	16.3	11.8	6.1	12.4	8.1	6.3	11.0	5.0	4.5
The former Yugoslav Republic of Macedonia	1.1	0.9	-0.7	3.3	2.8	7.2	-0.3	1.6	4.2	3.0	3.0
Commonwealth of independent States and Georgia d	12.5	10.4	12.2	9.4	9.5	15.2	11.3	7.1	9.6	7.8	6.9
Net fuel Exporters	12.8	10.4	12.2	9.5	9.2	14.2	11.0	6.9	8.7	7.1	6.7
Azerbaijan	2.2	6.7	9.5	8.2	16.6	20.8	1.4	5.6	8.0	6.0	6.0
Kazakhstan	6.4	6.9	7.5	8.6	10.8	17.1	7.3	7.1	8.5	8.5	6.0
Russian Federation	13.7	10.9	12.7	9.7	9.0	14.0	11.6	6.9	8.7	6.9	6.7
Turkmenistan	5.6	5.9	10.7	8.2	6.3	14.5	-2.7	4.5	6.5	8.0	8.0
Uzbekistan	3.8	3.7	7.8	6.8	6.8	7.8	7.4	7.3	11.0	10.0	10.0
Net fuel Importers	10.6	10.8	11.8	8.4	11.3	21.2	13.4	8.7	15.7	12.9	8.2
Armenia	4.7	7.0	0.6	2.9	4.4	8.9	3.4	8.2	8.2	5.5	4.0
Belarus	28.4	18.1	10.4	7.0	8.2	14.9	12.9	7.7	38.0	30.0	10.0
Georgia **d**	4.8	5.7	8.2	9.2	9.2	9.9	1.8	7.1	6.0	6.0	7.0

Kyrgyzstan	3.0	4.1	4.4	5.6	10.1	24.5	6.9	8.0	19.5	9.5	8.0
Republic of Moldova	11.7	12.5	12.0	12.8	12.3	12.8	-0.1	7.4	7.8	5.0	6.0
Tajikistan	16.3	7.1	7.2	10.0	13.4	20.9	6.4	6.5	13.0	9.0	6.0
Ukraine	5.2	9.0	13.5	9.1	12.8	25.2	15.9	9.4	9.2	8.3	8.0

a Data for country groups are weighted avrages where weights for each year are based on 2005 GDP in United State dollars.
b Partly estimated.
c Base line seenario forcasts based in part on project LINK and the UN/DESA world Economic Forcasting Model.
d Georgia officially left the Commonwelth of independent State on 18 August 2009. How ever, its performance is dicussed in the context of this groupe of countries for reasons of geographic proximity and similarities in economic structure.

(Source: World Economic Stuation and Prospects 2012)

साम्राज्यवादी देशों के आपसी समीकरण

पूर्वी यूरोप में सक्रिय साम्राज्यवादी शक्तियों के आपसी सम्बंध बेहद जटिल और उलझे हुए हैं। उनकी परस्पर निर्भरता और विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के वर्तमान एकीकरण का दौर उनके आपसी सम्बंधों में सुलह-समझौते और सौदेबाजी को फिलवक्त प्रमुखता प्रदान करता है। दूसरे शब्दों मे साम्राज्यवादी देशों के दुश्मनाना अंतरविरोध में कलह के स्थान पर सांठ-गांठ का पहलू प्रधान है।

कठोर सौदेबाजी के लिए यह तो सम्भव है कि विभिन्न साम्राज्यवादी ताकतें उन संकट ग्रस्त देशों में संघर्षरत विभिन्न पक्षों का पक्ष पोषण करें और उन्हें तरह-तरह से मदद पहुंचायें परन्तु यह सब कुछ वहां तक नहीं पहुंच सकता जहां ये सीधे एक-दूसरे से सैन्य ढंग से टकरायें। 'छद्म युद्ध' तो वे साठ के दशक से ही लड़ते रहे हैं। इसमें एक हद तक की कमी तभी तक आई थी जब रूसी साम्राज्यवादी गंभीर संकट में थे और सौदेबाजी करने की स्थिति में नहीं थे। पिछले दशक से जैसे-जैसे रूसी साम्राज्यवादी सौदेबाजी करने की स्थिति में आये हैं वैसे-वैसे वे इसके लिए लगातार प्रयत्नशील रहे हैं। अभी हाल में ही रूसी साम्राज्यवादियों ने सीरिया के मसले पर कामयाबी हासिल की थी और कुछ इसी तरह की स्थिति पहले जॉर्जिया और अब यूक्रेन में भी रही है। अपनी सैन्य और आर्थिक ताकत का इस्तेमाल वे लगातार कर रहे हैं।

पूर्वी यूरोप में तीन साम्राज्यवादी शक्तियां सक्रिय हैं: रूसी, अमेरिकी, फ्रांस व जर्मनी के नेतृत्व में यूरोपीय यूनियन। इन तीनों शक्तियों के आपसी संबंध काफी उलझाव भरे हैं यद्यपि पूर्वी यूरोप में अमेरिका व यूरोपीय यूनियन कमोबेश एक पाले में खड़े हैं और वे रूसी साम्राज्यवादियों को पूर्वी यूरोप में खासकर फिलवक्त यूक्रेन में पीछे धकेलना चाहते हैं।

रूसी साम्राज्यवादियों ने अपने इरादे खुले तौर वर्ष 2008 में ही दिखाने शुरू कर दिये। तात्कालीन राष्ट्रपति मेदवेदेव ने एक सिद्धान्त पेश किया जिसे "मेदवेदेव सिद्धान्त" (Medvedev Doctrine) कहा गया। जिसके तहत रूसी विदेश नीति की यह अप्रश्नीय प्राथमिकता ((unquestionable priority) होगी कि 'वह जहां कहीं भी रूसी नागरिक हैं, रूस उनके अधिकारों व सम्मान की रक्षा करेगा।' इस धारणा के तहत अगस्त 2009 में रूसी संसद ड्यूमा ने विदेशों में रूसी नागरिकों की रक्षा करने का अधिकार रूसी सेनाओं को दे दिया। रूसी साम्राज्यवादियों की यह नीति बेहद आक्रामक और दूसरे राष्ट्रों की सम्प्रभुता पर हमले करने वाली थी। यह बिल्कुल अमेरिकी साम्राज्यवादियों की दूसरे देशों में अपने राष्ट्रीय हितों के नाम पर हमला करने वाली नीति के अनुरूप है अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने अपने राष्ट्रीय हितों के नाम पर पिछले दो दशक में ही दर्जनों देशों पर हमले किये हैं।

इस वर्ष 2014 में रूसी साम्राज्यवादियों ने रूसी समर्थक राष्ट्रपति को यूक्रेन में पश्चिमी साम्राज्यवादियों की शह पर नव नाजी संगठनों द्वारा जबरन हटाये जाने को काफी गम्भीरता से लिया। और 'मेदवेदेव सिद्धान्त' के अनुरूप उन्होंने तेजी से हस्तक्षेप किया। क्रीमिया को बिल्कुल 'लोकतांत्रिक ढंग' से रूस में मिला लिया। रूस यूक्रेन के पूर्वी हिस्से, जिसे रूस 'नोवा रसिया' (नया रूस) नाम से अतीत में सम्बोधित करता रहा है, में अलगाववादी आंदोलन को प्रत्यक्ष समर्थन दे रहा है। क्रीमिया और नोवा रसिया में रूसी भाषी बहुमत में है।

वास्तव में यूक्रेन का संकट न तो उसके आंतरिक कारणों से और न ही रूसी हस्तक्षेप से उपजा। यह संकट मूलत: पश्चिमी साम्राज्यवादियों और उनके द्वारा 2004 से प्रायोजित की जाने वाली "रंगीन क्रांतियों" का परिणाम है। वे पूर्व सोवियत संघ के देशों और अन्य पूर्वी यूरोप के देशों में अपनी मनपंसद सरकारें नब्बे के दशक से ही बिठाते रहे हैं। यही नहीं सोवियत संघ के विघटन के बाद से ही पश्चिमी साम्राज्यवादी पूर्व सोवियत संघ के देशों को नाटो तथा अपेक्षाकृत समृद्ध देशों को यूरोपीय यूनियन में शामिल करते रहे हैं। पहले जॉर्जिया और फिर यूक्रेन में रूसी साम्राज्यवादियों ने अपने हितों को सुरक्षित करने और आगे बढ़ाने के लिए हर उस तरीके को अपनाया जो अब तक पश्चिमी साम्राज्यवादी अपना रहे थे।

यूक्रेन में रूसी साम्राज्यवादियों को मिलती सफलता के खिलाफ अमेरिकी साम्राज्यवादियों ने रूस पर कूटनीतिक व आर्थिक दबाव बनाने का तरीका अपनाया जो अभी तक खास कारगर नहीं रहा है। बड़े पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों के समूह जी-आठ से रूस को हटा दिया गया परन्तु रूस ने इसकी ज्यादा परवाह नहीं की। अमेरिका, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों के स्वर रूस की आलोचना में जितने तीखे रहे है उतने जर्मनी, ब्रिटेन आदि के नहीं रहे हैं। असल में अमेरिकी साम्राज्यवादियों के मुकाबले यूरोपीयन यूनियन और रूस की आपसी आर्थिक निर्भरता बहुत-बहुत ज्यादा है।

यूरोपीयन यूनियन रूस का प्रमुख व्यापारिक साझेदार है। निम्न चित्र-1 इसे बहुत अच्छे ढंग से पेश करता है:

चित्र-1 रूस के मुख्य व्यापारिक साझेदार (2012) (अरब यूरो में)

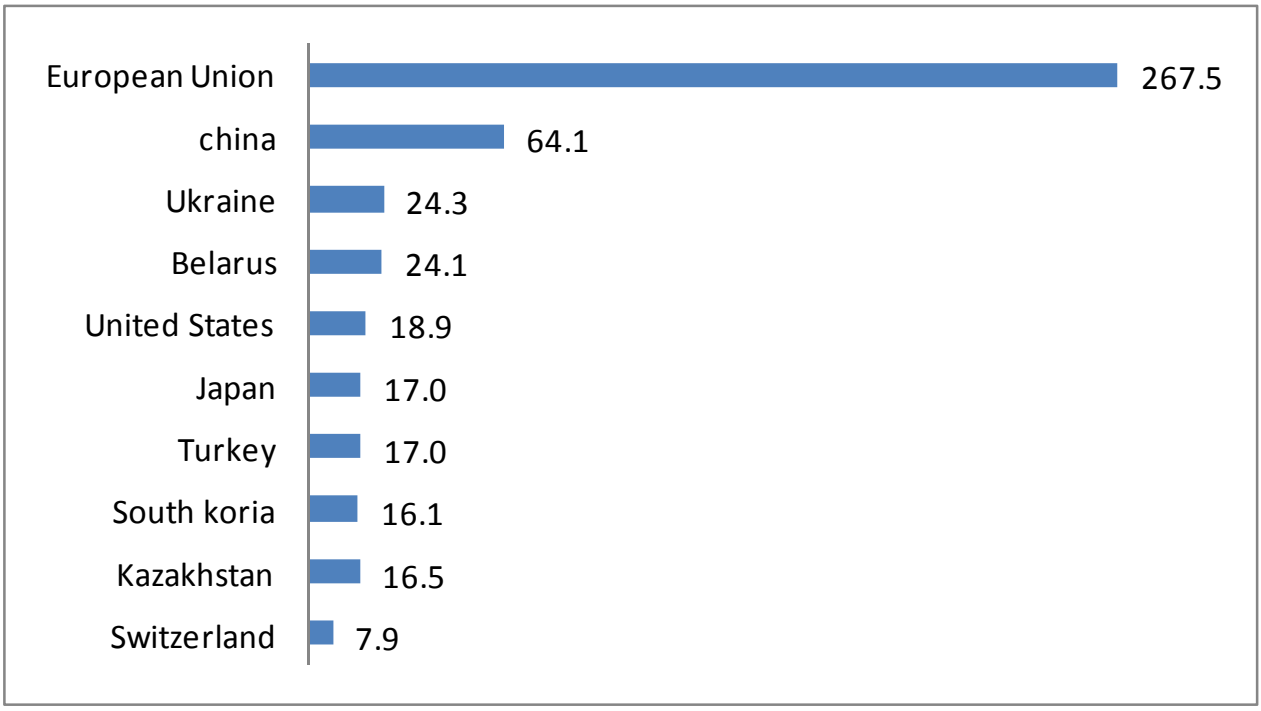

(source :Eurostate)

सी.आइ.ए. फैक्ट फाइल के अनुसार वर्ष 2013 में अनुमानत: रूस ने 515 अरब डालर का निर्यात किया और 341अरब डालर का आयात किया। इस तथ्य से स्पष्ट है कि व्यापार संतुलन मूलत: रूस के पक्ष में है। रूस के मुख्य निर्यात की वस्तुएं: पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पाद, प्राकृतिक गैस, धातुए, रसायन, लकड़ी और उससे जुड़े उत्पाद के साथ-साथ विभिन्न किस्म के सिविल और सैन्य सामग्रियां हैं। रूस के मुख्य आयात की वस्तुएं: मशीनरी, वाहन, दवाएं, प्लास्टिक, मांस, फल, लोहा, इस्पात आदि हैं। 2012 के अनुमान के अनुसार रूस के प्रमुख आयातक व निर्यातक देश निम्न हैं।

रूस के प्रमुख आयातक व निर्यातक देश

तालिका–5

	निर्यात		आयात
देश	प्रतिशत में हिस्सा	देश	प्रतिशत में हिस्सा
नीदरलैण्ड	14.6	चीन	16.6
चीन	6.8	जर्मनी	12.2
जर्मनी	6.8	यूक्रेन	5.7
इटली	6.2	जापान	5.0
तुर्की	5.2	सं.रा. अमेरिका	4.9
यूक्रेन	5.2	फ्रांस	4.4
बेलारूस	4.7	इटली	4.3

(स्रोत: सी.आई.ए. फैक्ट फाइल)

रूस और जर्मनी की परस्पर निर्भरता को उपरोक्त तालिका में देखा जा सकता है। जर्मनी रूस को निर्यात करने वाला दूसरा बड़ा देश है। रूस का निर्यात तीसरे स्थान पर जर्मनी को होता है। जर्मनी के शासकों की यूक्रेन के मसले पर रूस की ढीली आलोचना को इन तथ्यों से समझा जा सकता है। वैसे भी जर्मनी के शासकों ने रूस को अपनी विदेश नीति में नब्बे के दशक से प्रमुख स्थान दिया हुआ है।

'फ्रंटलाइन' के अपने एक लेख में एजाज अहमद ने रूस और यूरोपीयन देशों की परस्पर निर्भरता को इन शब्दों में पेश किया है,

"रूस का आधे से अधिक वाह्य व्यापार यूरोपीय यूनियन के साथ है, तकरीबन रूस की तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था में होने वाले कुल विदेशी निवेश का 75 फीसदी यूरोपीयन यूनियन से आता है। जर्मनी की 600 कम्पनियों का सैकड़ों अरब डॉलर का निवेश और कारोबार रूस में है जबकि रूस की 48 कंपनियां लंदन स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हैं और रूस, जर्मनी की ऊर्जा आवश्यकताओं के तीस फीसदी को पूरा करता है। 'डिफेंस न्यूज' के अनुसार रूस को विभिन्न यूरोपीय हथियार निर्माताओं, जिसमें स्वीडिश भी शामिल हैं की वर्तमान और भावी बिक्री अमेरिका द्वारा लगाये जाने वाले प्रतिबंध राज में शामिल होने पर ज्यादा भारी है। फ्रांस (प्रतिबंध राज में शामिल होने के साथ-अनुवादक) रूस को अपने हथियारों की बिक्री जारी रखना चाहता है जिसमें 1.7 अरब डॉलर के मिस्ट्रल क्लास हेलीकॉप्टर वाहकों का सौदा भी शामिल है।" (A New Cold War Aijaz Ahmad, Frontline May 2, 2014 अनुवाद हमारा)

इसके बाद एजाज अहमद सवाल उठाते हैं कि क्या अमेरिकी साम्राज्य की मनमर्जी के लिए यूरोपीयन यूनियन, जबकि उसकी अर्थव्यवस्था ठहराव का शिकार है, इस तरह के जुए खेलने का जोखिम उठायेगा।

एजाज अहमद की बात ठीक है इसलिए पिछले महीनों में रूस पर अमेरिकी साम्राज्यवाद द्वारा जो प्रतिबंध लगाये गये वे कोई खास कारगर नहीं साबित हुए। वे अपने चरित्र में औपचारिक और अप्रभावी हैं। यूरोपीयन यूनियन रूस पर कोई कारगर प्रतिबंध लगाने की स्थिति में नहीं है।

यूरोपीयन यूनियन के कई देश अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए रूस पर पूरी तरह से निर्भर हैं। जॉर्जिया और यूक्रेन के खिलाफ तो रूस ने इस हथियार को बहुत कारगर ढंग से इस्तेमाल किया और वह हासिल कर लिया जो वह चाहता था। जॉर्जिया के दो रूसी भाषी बहुल हिस्से दक्षिण ओस्सेशिया और अबखाजिया रूस के संरक्षित क्षेत्र बन गये हैं। वैसे दोनों ही स्वतंत्र राष्ट्र हैं जिन्हें रूस, वेनेजुएला आदि कुछ देशों ने मान्यता भी दे दी है।

यूरोपीयन यूनियन के अपने हित रूस के खिलाफ उसे अमेरिकी साम्राज्यवाद का मुखर सहयोगी नहीं बनने देते हैं। वे यूक्रेन के मसले पर रूस के हितों को मान्यता देकर समझौता कर लेना चाहते हैं। जहां तक अमेरिकी साम्राज्यवाद का सवाल है वह वर्तमान विश्व आर्थिक संकट के दौर में यह जोखिम नहीं उठा सकता है कि रूस के मसले पर यूरोपीयन यूनियन पर निर्णायक दबाव डाल सके। यूरोपीयन यूनियन साथ ही अपने घनिष्ठ आर्थिक, राजनैतिक व सैन्य रिश्तों के कारण अमेरिकी साम्राज्यवाद की रणनीति व रणकौशल से अपने को अलग या एक निश्चित दूरी भी नहीं बना सकता है। इसलिए यूरोपीयन यूनियन खासकर जर्मनी, फ्रांस व यहां तक कि ब्रिटेन की नीति 'इंतजार करो और देखो' की है।

अमेरिकी साम्राज्यवाद ने पूर्वी यूरोप के विकसित देशों पोलैण्ड, चेक रिपब्लिक, हंगरी आदि में भारी पूंजी निवेश किया हुआ है। वे अन्य देशों में भी अपनी स्थिति को मजबूत करना चाहते हैं। परन्तु जर्मनी, फ्रांस इस मामले में ज्यादा मुखर हैं। और अपने इन घनिष्ठ सहयोगियों और उनके हितों को नंजरअंदाज करने की स्थिति में अमेरिकी साम्राज्यवादी नहीं हैं।

अमेरिकी साम्राज्यवाद और रूस की परस्पर निर्भरता काफी कम है। अमेरिका और रूस एक दूसरे के बड़े व्यापारिक साझेदार भी नहीं हैं। दोनों की ऊर्जा की जरूरतों के मामले आत्म निर्भरता है। दोनों के ही यूरोपीयन यूनियन, चीन और जापान से घनिष्ठ व्यापारिक सम्बंध हैं। यूरोपीयन यूनियन, चीन और यहां तक कि जापान रूस से आर्थिक सम्बंध भंग तो क्या कमजोर बनाने की स्थिति में भी नहीं हैं।

पूर्वी यूरोप के देश चाहे वो विकसित हों अथवा पिछड़े साम्राज्यवाद के आपसी सम्बंधों के जटिल समीकरण के जाल में फंस कर अपनी सम्प्रभुता, आत्मनिर्भरता और एक हद तक अपनी राजनैतिक हैसियत को खो रहे हैं अथवा दांव पर लगा रहे हैं। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में इन देशों का शासक वर्ग ऐसी स्थिति में नहीं है कि वे साम्राज्यवाद का मुखर तो क्या मरियल विरोध भी कर सकें। वे एक या दूसरी साम्राज्यवादी शक्ति के साथ सटने को मजबूर हैं।

पूर्वी यूरोप का भविष्य

1994 में बुडापेस्ट में एक सहमति पत्र में अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम और रूस के द्वारा हस्ताक्षर किये गये थे। सहमति पत्र में हस्ताक्षर करने वाले इस बात पर सहमत थे कि यूक्रेन के खिलाफ किसी भी किस्म का बल, चाहे वह सैन्य हो या आर्थिक, वाह्य शक्तियां इस्तेमाल नहीं करेंगी।

यूक्रेन के पिछले दस वर्षों के इतिहास को उठाकर देखा जाय तो इस सहमति पत्र का कोई औचित्य नहीं दिखायी देगा। यूक्रेन जो कि यूरोप का दूसरा बड़ा देश था वाह्य शक्तियों के हस्तक्षेप और घृणित मंसूबों के कारण गृहयुद्ध के चंगुल में फंस गया है। आर्थिक रूप से वह बुरी तरह से जर्जर है। पश्चिमी साम्राज्यवादियों द्वारा उपलब्ध कराये गये कर्ज से ही वह अपने को दिवालिया होने से फिलहाल बचा पाया है।

यूक्रेन के अंदर सामाजिक तनाव चरम पर है। उच्च बेरोजगारी दर, महंगाई और सामाजिक असुरक्षा के बीच नाजी तत्वों, दक्षिणपंथी संगठनों व गैर सरकारी संगठनों का बोलबाला है। संशोधनवादी कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभाव कमजोर पड़ता जा रहा है। मजदूर वर्ग असंगठित है और क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी को लेकर कोई सुगबुगाहट नहीं है। पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों से संचालित व धन प्राप्त गैर सरकारी संगठनों का व्यापक नेटवर्क है।

यूक्रेन पूर्वी यूरोप का एक प्रतिनिधिक उदाहरण है। उसका वर्तमान और निकट भविष्य इस बात को दिखला रहा है कि कैसे एक मुल्क जो कि प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है तथा जिसका औद्योगिक क्षेत्र काफी उन्नत है, बर्बादी के कगार पर खड़ा है, साम्राज्यवादी देशों के षड्यंत्र और होड़ का शिकार है।

पूर्वी यूरोप के अधिकांश देश गहरे आर्थिक संकट के शिकार हैं और सामाजिक तनाव बढ़ता जा रहा है। फासीवाद व नव नाजीवाद की आहट हर देश में सुनी जा रही है। साम्राज्यवादी ताकतों के निरंतर हस्तक्षेप और उनकी आपसी होड़, इन देशों के शासक वर्ग के घृणित हितों के साथ बने घृणित गठजोड़ के कारण हालात बद से बदतर हो रहे हैं।

हाल के वर्षों में पोलैण्ड, चेक गणराज्य, लाटविया, बुल्गारिया आदि देशों में मजदूर वर्ग ने व्यापक प्रदर्शन किये हैं। आर्थिक हड़तालें आयोजित की हैं। कुछ हद तक, समाजवाद के असली व नकली काल की आज के समय से तुलना करके उसे बेहतर समझने और याद करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। विश्व आर्थिक संकट ने आम जनता को पूंजीवाद के आम चरित्र को समझने को मजबूर किया है। वर्तमान पूंजीवादी राज्य के द्वारा उठाये जा रहे कठोर कदमों ने उन्हें और ज्यादा इस व्यवस्था का आलोचक बना दिया है।

पूर्वी यूरोप का भविष्य तय भी इस बात से होना है कि इन देशों में श्रम और पूंजी का बुनियादी अंतरविरोध किस तरह से और किस दिशा में विकसित होता है। मजदूर वर्ग के संगठित होने और सबसे बढ़कर उसकी क्रांतिकारी पार्टी के जन्म और विकास पर यह बात निर्भर करती है कि पूर्वी यूरोप के देश किस दिशा में बढ़ेंगे। अगर मजदूर वर्ग इकट्ठा होता है और समाजवाद को अपनी पार्टी के नेतृत्व में एजेण्डे में ले लेता है तो पूर्वी यूरोप की धरती में फिर से लाल झण्डा लहरा उठेगा।

जहां तक अन्य दो बुनियादी अंतरविरोधों साम्राज्यवाद बनाम जनता तथा साम्राज्यवादी देशों के आपसी अंतरविरोधों के तीखे होने अथवा किसी एक के मुखर होने से भी इन देशों में श्रम और पूंजी का अंतरविरोध और विकसित व तीव्र हो उठेगा। परन्तु इन परिस्थितियों में जबकि संकट गहरा हो रहा होगा, बिना क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के स्थितियां जॉर्जिया या यूक्रेन जैसी ही बनी रहेंगी।

अतीतग्रस्तता के कारण मोल्दोवा में 2001 में संशोधनवादी कम्युनिस्ट पार्टी को जनता ने पुनः सत्ता पर बैठाया था परन्तु लगभग एक दशक के शासन में वह उससे भिन्न कुछ न कर सकी जो अन्य देशों में पूंजीवादी या दक्षिणपंथी पार्टियों ने किया था। मोल्दोवा का उदाहरण यह दिखलाता है कि अतीत की संशोधनवादी कम्युनिस्ट पार्टियां या नेता सर्वहारा वर्ग के किसी काम के नहीं है। वे विचारधारात्मक भ्रम फैलाकर और अपने कृत्यों से वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था को ही दीर्घजीवी बनायेंगी। इन पार्टियों का मजदूर वर्ग से पूर्ण अलगाव आवश्यक है। इन्हें मजदूर वर्ग की पांतों से खदेड़ा जाना आवश्यक है। नई समाजवादी क्रांतियों का निर्माण मजदूर वर्ग की आज की उन्नत विचारधारा मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा के आधार पर किया जा सकता है। माओ विचारधारा के आधार पर समाजवादी समाजों में पूंजीवादी पुनर्स्थापना के भौतिक व आत्मिक कारणों को सही ढंग से समझा जा सकता है। इसी के आधार पर मजदूर वर्ग सहित आम जनता को समाजवाद के प्रति पुनः कायल किया जा सकता है।

■■■